सत्यांश

चाल-चरित्र बचाकर क्या होगा?

बिहार विधानसभा के लिए चुनाव अक्टूबर-नवंबर में होने की संभावना है। इस बार का चुनाव कई रूपों में अलग होगा। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अठारह वर्षों के बाद एक बार फिर लालू प्रसाद के साथ होंगे। विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व वाले जनता दल में लालू यादव के पक्के सहयोगी नीतीश कुमार थे। बाद में बिहार जनता दल में लालू यादव का एकछत्र बोलवाला हो गया, जिस कारण दूसरे कई नेताओं की तरह नीतीश कुमार भी न केवल लालू यादव का साथ छोड़ गए, बल्कि उन्हें उखाड़ने के लिए भारतीय जनता पार्टी से हाथ मिला लिया और सतरह साल तक केन्द्र और राज्य में सत्ता-सुख भोगते रहे। इधर लालू यादव भी 2005 ई. तक बिहार में और 2009 ई. तक केन्द्र में सत्ता संचालन के सूत्रधार रहे, भागीदार रहे। लेकिन पिछले दस साल से बिहार की राजनीति में और छह साल से केन्द्र की राजनीति में हाशिए पर थे। केन्द्र में मोदी सरकार बनने के बाद उनकी राजनीतिक बेचैनी अधिक बढ़ गई।

भारतीय जनता पार्टी से गठबंधन खत्म करने के कारण नीतीश कुमार राष्ट्रीय राजनीति में अप्रासंगिक और बिहार में सत्ता गँवाने के कगार पर पहुँच गए थे। इसे बचाए रखने के लिए लालू प्रसाद से हाथ मिलाना उनकी मजबूरी बन गई। लालू यादव की भी दिक्कत सिर्फ भाजपा के साथ होने के कारण जनता दल (यू) से थी, इसलिए जैसे दोनों का गठबंधन टूटा, राष्ट्रीय जनता दल ने जनता दल (यू) से गठजोड़ कर लिया। लालू प्रसाद को मुकाम मिल गया, भाजपा बिहार की सत्ता से बेदखल होकर विरोधी दल की भूमिका में आ गई। इधर लालू प्रसाद के साथ जाने के कारण नीतीश कुमार से भाजपा के मेलजोल की संभावना तत्काल खत्म हो गई। भाजपा ने इसी कमी को पूरा करने के लिए राम विलास पासवान, उपेन्द्र कुशवाहा और जीतन राम माँझी की पार्टियों - लोक जनशक्ति पार्टी, राष्ट्रीय लोक समता पार्टी और हिन्दुस्तानी आवाम मोर्चा से गठबंधन कर लिया है। केन्द्र में अपनी सरकार होने के कारण यह गठबंधन करना भाजपा के लिए आसान हुआ है।

पिछले चुनावों के प्रतिद्वन्द्वियों ने अपना पाला इस बार के चुनावी महाभारत में बदल लिया है। पहले सहयोगी रहे अब प्रतिद्वन्द्वी हो गए हैं और कहीं प्रतिद्वन्द्वी सहयोगी बन चुके हैं। पक्ष बदलने का खेल सायास-अनायास महाभारत युद्ध में भी हुआ था, चुनावी अखाड़े में तो दल-बदल आम बात है। जाहिर है कि इस बार के चुनाव में एक ध्रुव पर भाजपा और उसके सहयोगी दल हैं, तो दूसरे ध्रुव पर जनता दल (यू) और राष्ट्रीय जनता दल वाला तीसरा मोर्चा यानी पुराना जनता दल परिवार और कांग्रेस पार्टी है। केन्द्र में भाजपा सरकार बनने के बाद से इसके परंपरागत विरोधी एकजुट होने लगे हैं। पुराने जनता दल परिवार के विलय की कोशिश इसी का नतीजा है, परंतु इस परिवार की नियति है कि जब साथ होते हैं तो व्यक्तिगत स्वार्थों व जातिगत अहंकारों के कारण अलग होने के लिए छटपटाते हैं और जब अलग होते हैं, तब अपनी प्रासंगिकता तलाशने के लिए साथ-साथ होने का स्वांग रचने लगते हैं। एकजुट होकर बिखरना और बिखरकर एकजुट होने का सिलसिला चलता रहता है। मनुष्य का स्वभाव भी यही है कि वह अव्यवस्था में होने पर व्यवस्था चाहता है और व्यवस्था में रहने पर उसे तोड़ता है।

भारतीय जनता पार्टी अपने नेतृत्व में बिहार में सरकार बनाने की जी-तोड़ कोशिश में लगी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भिन्न-भिन्न स्थानों पर सफल रैलियों को संबोधित करना शुरू कर दिया है, वहीं लोजपा, रालोसपा और हम के साथ भाजपा गठबंधन का समीकरण भी तैयार है। इन दलों को चाहे अपने दम पर पाँच-दस सीटों पर जीत हासिल न पाए, लेकिन अपने जातीय जनाधार के कुछ प्रतिशत मतों को भी यदि भाजपा की ओर हस्तांतरित करने में कामयाब हो गए तो भाजपा का पक्ष मजबूत हो सकता है और इनका खुद का वजूद भी पुख्ता होगा। राष्ट्रीय जनता दल और जनता दल (यू) का जातीय आधार भी मजबूत है। दोनों क्षत्रपों लालू प्रसाद और नीतीश कुमार का अपना-अपना परंपरागत जातीय आधार है, जिसे एकजुट करने में दोनों सफल हो गए तो स्थिति सुदृढ़ हो सकती है, साथ ही मुस्लिम मतदाताओं पर इनकी पकड़ कितनी बनी रहती है - यह काफी निर्णायक होगा। यह सब आसान नहीं है, क्योंकि दोनों का जातीय जनाधार लंबे समय से एक-दूसरे के खिलाफ काम करता रहा है। नीतीश कुमार का जनाधार लालू-विरोध की नींव पर निर्मित हुआ था, जहाँ जातीय कारणों से परे भी एक बड़ा वर्ग जनता दल (यू) के साथ जुड़ा; लालू प्रसाद के साथ होने पर जिसके बिदकने की आशंका है; परंतु इसी कारण अनेक जुड़ेंगे भी।

इस बार की चुनावी लड़ाई को लालू प्रसाद ने पुनः मंडल-कमंडल की लड़ाई कहा है, मंडलवाद की पुनर्वापसी की बात कही है, वहीं दूसरी ओर, भाजपा द्वारा लालू प्रसाद के जंगल राज का डर दिखाया जा रहा है; परंतु इन सबके कारगर होने की उम्मीद अतिक्षीण है। लोग सुदृढ़ कानून व्यवस्था और भ्रष्टाचार से मुक्ति चाहते हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात, बिजली जैसी मूलभूत सुविधाओं के साथ संपूर्ण विकास चाहते हैं। बिहार में भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार का कामकाज अभी लोगों ने नहीं देखा है, अतः पिछले आम चुनाव की तरह बिहार विधानसभा चुनाव में भी भाजपा के प्रति कुछ हद तक आकर्षण दृष्टिगत होता है। कितना फलितार्थ होगा - यह परिणाम आने पर पता चलेगा। लेकिन आम लोगों की तरह कुछ नेताओं में भी जोश-उत्साह है। इसलिए दल-बदल कर भाजपा की ओर जाने वाले बढ़ गए हैं, जिससे पार्टी के अपने चाल-चरित्र और चेहरे पर रासायनिक व भौतिक परिवर्तन आना स्वाभाविक है, पर सवाल यह भी है कि बिना सत्ता-साधन के चाल-चरित्र और चेहरे को कब तक बचा कररखा जा सकता है और बचाकर होगा भी क्या?